B.A. PART - 1
हिन्दी (प्रतिष्ठा) द्वितीय-पत्र
मध्ययुगीन इतिहास एवं काव्य
Page No. 1
Date शेषभाग - 2

प्रश्न :- रीतिकालीन वीर-काव्य की विशेषताएँ बताएँ ?

उत्तर - शेषभाग :-

(3) देशभक्ति और वीरता का गौरव :-

वीर-साहित्य रचने वालों में मुख्यतः दो प्रकार के कवि रहे हैं - पहले ऐसे कवि, जिनमें वीरता की सच्ची भावना थी, जो स्वयं भी युद्ध-क्षेत्र के अनुभवी थे, साथ ही विधर्मी अत्याचारी शासकों के प्रति उनके मन में आक्रोश भी था। दूसरे ऐसे कवि, जो मूलतः रसिक एवं शृंगारी थे, परन्तु उन्होंने आश्रयदाता की प्रशंसा में वीर-काव्य लिखा। उक्त विशेषता प्रथम वर्ग के साहित्य में दिखाई देती है। भूषण, लाल कवि, सूदन आदि की रचनाओं में आश्रयदाता की मात्र प्रशस्तियाँ नहीं हैं, अपितु कवि के मन की देशभक्ति और वीरता के प्रति ग्रह दिखाई देती है। अनेक कवियों के नायक उच्चकोटि के आदर्श वीर हैं, जिन्होंने किसी-न किसी व्यापक प्रयोजन एवं महान् लक्ष्य को सामने रखकर अपने शौर्य एवं आत्मत्याग का प्रदर्शन किया है। अपनी वीरता और देशभक्ति के बल पर अचेत महाराष्ट्र में स्वतंत्रता की ज्योति ~~प्रज्वलित~~ प्रज्वलित करने वाले शिवाजी, उनकी प्रेरणा से आत्मसम्मान जागने पर उसी ज्योति को राजपूताना में फैलाने वाले महाराज छत्रसाल, औरंगजेब की हिन्दू-विरोधी नीति के विरुद्ध संघर्ष करने वाले केसरीसिंह, अलाउद्दीन जैसे प्रतापी सम्राट को चुनौती देने वाले हम्मीर देव, मुगल साम्राज्य की नींव हिला देने वाले भरतपुर के जाट-योद्धा सूरजमल आदि के व्यक्तित्व का चित्रण मात्र प्रशस्ति या स्तुति का मुखापेक्षी नहीं है। इनकी साहसिकता, वीरता और त्याग का गुणगान तत्कालीन और आज के समाज में आत्मसम्मान करने वाली कृतियाँ हैं। आदिकालीन

रासो ग्रन्थों के समान इन रचनाओं में शृंगारांकित वीरता का बखान नहीं है, वीरों की ये सच्ची गाथाएँ अपने स्वाभिमान और अस्तित्व-रक्षा की गौरवमयी प्रस्तुति है। भूषण की मुक्तक रचनाएँ जातीयता एवं राष्ट्रीयता के भावों की अभिव्यक्ति हैं। महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी, महाराज छत्रसाल की प्रशंसात्मक मुक्त रचनाओं में कवि की व्यापक दृष्टि, उच्च आदर्शों एवं सच्ची वीरोपासना के दर्शन होते हैं। इन कवियों ने मुस्लिम शासकों की जो भर्त्सना की है, उसकी ओर संकेत करके उन्हें साम्प्रदायिक कहने में भी कुछ आलोचक हिचकिचाते नहीं हैं। इस काल में रीति-साहित्य के समान ही वीर-साहित्य को भी पूर्वाग्रहों से अलग होकर युगीन परिप्रेक्ष्य में देखना चाहिए, तभी इनका सही मूल्यांकन हो सकता है।

(4) <u>व्यक्तिगत वीरता का बखान</u>:

भूषण, लाल कवि, सूदन आदि पूर्वोल्लिखित कवियों को छोड़कर शेष कवियों ने अपने आश्रयदाताओं की जो प्रशस्तियाँ लिखी हैं, उनमें आश्रयदाता की वैयक्तिक वीरता का बखान अधिक मात्रा में दिखाई देता है। वैसे यह युग ही वैयक्तिक वीरता-प्रदर्शन का था। चहुँओर विलासिता में डूबे छोटे-बड़े शासक सामन्तों के जीवन का उद्देश्य मात्र विलासिता, झूठी प्रतिष्ठा और सत्ता-लिप्सा के लिए पड़ोस के कमज़ोर शासक पर आक्रमण करना था और उनके आश्रित कवि उनकी वीरता की प्रशंसा में काव्य लिखकर अर्थ-प्राप्ति करते थे। श्रीधर, सदानन्द, गुलाब कवि, पद्माकर आदि दरबारी कवियों का काव्य इसी

प्रकार का है। रीति-ग्रन्थों के आरम्भ में आश्रयदाताओं की वंशावली और उनकी वीरता की प्रस्तुति गाने की परम्परा रीति कवियों में भी देखी जाती है। इस प्रकार के कवियों की रचना में कभी पांडित्य-प्रदर्शन तो कभी झूठी प्रशंसा अधिक मात्रा में दिखाई देती है। श्रीधर का 'जंगनामा' और पद्माकर की 'हिम्मत बहादुर विरुदावली' के नायक क्रमशः फर्रुखसियर और हिम्मत बहादुर थे। युद्धों की जो वीरता इन कवियों ने प्रस्तुत की है, वह इसी तरह की व्यक्तिगत वीरता है। फर्रुखसियर के तीन युद्ध सत्ता-लिप्सा और सत्ता-प्राप्ति के लिए हुए और हिम्मत बहादुर का जुझारसिंह से युद्ध व्यक्तिगत प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए हुआ है। माना कि दोनों वीर हैं, किन्तु वीरता स्वकेन्द्रित है। उनकी वीरता की अपने युग को कोई देन नहीं, इसीलिए इस प्रकार के वीर-काव्य में उनकी वीरता का चाहे जैसा बखान हो, लोगों के मन पर प्रभाव नहीं डाल सकती। वीर-काव्य का नायक अगर समाजोन्मुख न हो, तो उनकी प्रशस्तियाँ भी मात्र किताबों के पन्नों में रह जाती हैं। यही कारण है कि इस युग में इस तरह के आश्रयदाताओं की वीरता की प्रशस्तियों से भरा साहित्य विपुल मात्रा में लिखा गया है और उनके अगले उत्तराधिकारियों के रनवासों में या राजपरिवारों के ग्रन्थालयों में सड़ता हुआ नष्ट हुआ है। जीवन-शक्ति के अभाव में काव्य दीर्घजीवी नहीं होता, यही इस काव्य के साहित्य का निकर्ष है।

(5) युद्धों का सांगोपांग वर्णन :-

इस काल की अधिकांश रचनाओं में नायक को युद्ध-वीर के रूप में चित्रित किया गया है। वैसे भी यह काल

चहुँओर धौंसे और नगाड़े बजने का काल है। विभिन्न उद्देश्यों को लेकर छोटे- बड़े सामन्तों में परस्पर वैमनस्य और संघर्ष चहुँओर व्याप्त था। अतः इस समय के कुछ कवियों के लिए स्वानुभव और कुछ कवियों के लिए आँखों देखी घटनाएँ थी, इसीलिए लगभग सभी रचनाओं में युद्ध का सांगोपांग वर्णन देखा जाता है। दैनिक जीवन में जहाँ विलासिता का साम्राज्य था, लोग अधिकाधिक विलास- सामग्री एकत्र करने में जुटे ही थे, वहीं बात- बात में युद्ध छिड़ जाते थे। कहीं धर्मरक्षा के लिए और कहीं आन- बान की रक्षा के लिए। कुछ युद्ध रूप- लिप्सा और विलास- वासना को तृप्त करने के लिए भी हुए। इस युग के वीर-साहित्य में लगभग सभी युद्धों का वर्णन किया गया है।

युद्ध- वर्णन में कवियों की रुचि विस्तृत वर्णन की ओर अधिक रही है- सेना का वर्णन, विभिन्न शस्त्रों की सूची, युद्ध की पूर्व- तैयारी, युद्ध का उन्माद आदि। इन कवियों में वीरता के प्रति श्रद्धा-भाव था तथा ये स्वयं भी वीर-भाव से ओत- प्रोत थे, ऐसे कवियों के युद्ध- वर्णन सजीव और स्वाभाविक बन पड़े हैं जो मूलतः श्रृंगारी प्रवृत्ति के कवि थे, उनके युद्ध- वर्णन में इतिवृत्तात्मकता, वस्तुपरिगणन और बहुज्ञता- प्रदर्शन के कारण उबाऊ और नीरस भी हो गये हैं। भूषण के युद्ध-वर्णन में एक प्रकार का ओज है, वीर भावना का स्फुरण है। शिवाजी के युद्ध - प्रस्थान का यह ओजस्वी चित्रण उदाहरण के रूप में प्रस्तुत है—

"साजि चतुरंग सैन अंग में उमंग धरि,

सरजा शिवाजी जंग जीतन चलत हैं।
भूषण - भनत नाद विहद नगारन के,
नदी - नद मद गैबरन के रलत हैं।
ऐल फैल खैल भैल खलक में गैल-गैल
गजन की ठेल पेल सैल उसलत हैं।
तारा सो तरनि धूरि धारा में लगत जिमि,
धारा पर पारा पारावार यों हलत हैं।"

(शेषभाग बचा है।)

पता:-
डॉ० समदर्शी कुमार
विभाग- हिन्दी (S.R.A.C) (B.R.A.B.U. M)
मो० न०- 7909046087
दिनांक - 23.02.2022